मैथिली (प्रतिष्ठा)
बी०ए० (म) पार्ट-2

बसंत कुमा
अतिथि शिक्षक
~~दिनांक-~~

दिनांक 14-07-20क शेष 24.07

प्रकरण- विद्यापति

लिखनावली- नेपालक राजा बनैलीक प्रवास कालमे विद्यापति पद रचना ओओर श्रीमद्भागवतक लिपिकरणाक संगहि लिख-नावली नामक पुस्तकक रचनाकयलनि। ई पत्र लेखन शैलीक उदाहरण रूपमे लिखल गेल अछि, वस्तुत: पत्र- लेखन कठिन काज थिक जाहिमे सम्बोधन तथा भावक संतुलन अत्यावश्यक होइत अछि। बुझि पड़ैत अछि जे ई यह शिक्षा देबाक हेतु विद्यापति लिखनावलीक रचना कयलनि।

शिवसिंहक उपरांत विपत्ति कालमे विद्यापतिकेँ राजा बनैलीसँ पत्राचारक आवश्यकता पड़ल होयतनि, जे लिखनावलीक प्रेरक तत्व बनि गेल। लिखनावलीमे दुआ/दुइ दर्जन पत्रक उदाहरण अछि जाहिमे ल० सं० 299 उल्लिखित अछि, जे एकर लेखन कालक प्रमाण थिक।

शेष अगिला अंकमे

मिथिलाक आन्तरिक जीवनमे कोनो बाधा नाहि होइत छल। मिथिला वही समयमे भारतवर्षक उच्चतम विद्यापीठ मानल जाइत छल। देशक कोना-कोनासँ ज्ञान-पिपासु छात्र-लोकनि मिथिला आबि क विद्यार्जन करैत छलाह। प्रजामे वर्ग-भेद रहितहुँ पारस्परिक सौमनस्य छल। वर्णरत्नाकर स्वयं एहि युगक सुख-शान्तिपूर्ण उल्लासमय जनजीवनक सुन्दर वर्णन थिक। वर्णरत्नाकरमे मुख्यतः राजाकेँ केन्द्रबिन्दु बनाकए परिकल्पित अछि, किन्तु प्रसंगवश सामान्य जनजीवनक चित्रण भेल अछि। समाजाक सभ वर्गक एहिमे वर्णन कएल गेल अछि, कोनहु ठाम शोषण, उत्पीड़न, घृणाक आभास नाहि भेल अछि। तेँ एहि युगकेँ मिथिलाक लेल स्वर्ण युग कहि सकैत छी।

शेष अगिला अंकमे